डॉ०शैलेन्द्र मोहन मिश्र
स०प्रा० मैथिली विभाग
सी०एम०जे०कॉलेज
दोनवारी हाट , खुटौना
मो०न०9546743796 , 9434306082
Email - mishrasm966@gmail.com
B A II. Part

पारिजातहरण : एक परिचय

पारिजातहरण कीर्तनियाँ नाटकक प्रगतिमे एक नवीन उत्थान अनलक , एक नवीन दिशा देलक , ओहिमे काव्यक चमत्कारे नहि अपितु मनोरंजनक समावेश सेहो कएल गेल । चरित्र ओ कथा अंग - अंगी रूपमे अछि । कथानक एवं चरित्र चित्रणक दृष्टिएँ ई नाटक परवर्ती नाटककार लोकनिक हेतु एक नवीन दिशा ओ आदर्श स्थापित कएलक ।

एहि नाटक मध्य पाँच गोट पुरूष पात्र एवं छओ गोट स्त्री पात्र छथि । श्रीकृष्ण नायकक रूपमे एवं सत्यभामा नायिकाक रूपमे छथि । एहि नाटक मध्य नारदक महत्वपूर्ण स्थान अछि । हुनक अवतारणाक दुई उद्देश्य मुख्य छल सत्यभामाक अभिमान कें चूर्ण करब तथा इन्द्रक मदकें नष्ट करब । एहि नाटकमे बहुविवाहक दुर्गुण दिस सेहो अप्रत्यक्ष रूपसँ संकेत अछि ।

नाटकक हेतु रसक प्रधानताक सेहो अछि । कारण रसकें काव्यक आत्मा कहल गेल अछि । तैं पारिजात हरण मे नाटककार द्वारा उत्तम रसक प्रतिपादन कएल गेल अछि । ओना पारिजातहरण वीररस प्रधान नाटक थिक । कारण इन्द्र आ कृष्णक युद्ध मे ई स्पष्ट परिलक्षित होइछ । नाटकक नामकरण सेहो प्रायः एही विचार सँ भेल होएत ।

" ऐरावत असवार पुरन्दर घन भूषण धनु हाथे ।
सहस तुरग रथ चढ़ल धनुर्धर तनय जयन्तक साथे।।"

उपरोक्त पाँती सँ वीर रसहिक पुष्टि होइत अछि ।

जँ देखल जाए त नाटकमे आद्योपांत श्रृंगार तथा हास्यक राज्य स्थापित अछि । श्रृंगारक अधिकता तथा परिपुष्टिक कारणें वीर रस कें प्रधान मानबा मे विद्वान लोकनि एकमत नहि होइत छथि । एहिमे संयोग आ वियोग श्रृंगारक वर्णन भेल अछि । गीति प्रधान एहि नाटक मे चमत्कारक अछि मैथिली गीत सभ , जे श्रृंगार रस सँ ओत - प्रोत अछि । एहि गीतक कलात्मकताक निखार श्रृंगार रसक प्रधान वस्तु मान , विरह , नायिका क अंतर्द्वंद्व आदि सँ आएल अछि ।

नायिकाक विरहक वर्णन करैत सुमुखी कें देखल जाए-

" कि कहब माधव तनिक बिसेसे ।
अपनहु तनु धनि पाव कलेसे ।।
अपनुक आनन आरसि हेरी ।
चानक भरम काँप कत बेरी ।। "

ओतहि जाहि सत्यभामा कें ई विश्वास छलनि जे कृष्ण केवल हमरहि टा सँ प्रेम करैत छथि , हमही सबसँ बेसी हुनक प्रिय छियनि , मुदा कृष्णक एहन व्यवहार देखि ओ आहत भए व्याकुल भए आक्रोश मे जरए लगैत छथि । आक्रोशक पराकाष्ठा निम्न पाँती मे देखल जाए सकैत अछि -

" हरि सउ प्रेम आस कय लाओल ।
पाओल परिभव ठामे ।।
जलधर छाहरि तर हम सुतलहुँ ।
आतप भेल परिनामे ।। "

ओ एतेक व्यथित छथि जे अपन जिअव तक हुनका निरर्थक ओ निष्प्रयोजन बुझाइत छनि ।

" सहस पूर्ण ससि रहओ गगन बसि ।
निसि वासर देओ नन्दा ।।
भरि बरिसओ बिस बहओ दहओ दिस ।
मलय समीरन मंदा ।।
साजनि आब जिबन किअ काजे ।।"

सत्यभामा मान करथि आ कृष्ण अपन अति प्रिय सत्यभामा कें नहि बौंसथि से कोना होएत । ओ सत्यभामा लग क्षमा प्रार्थी होइत छथि । नाटककार कृष्णक भाव कें एहि गीतक माध्यमे व्यक्त कएल अछि। द्रष्टव्य अछि -

" कमल बदन कुबलय दुहू लोचन
अधर मधुरि निरमाने ।
सगर सरीर कुसुम तुअ सिरिजल
किए तुअ हृदय पखाने ।।
असकति कर कंकन नहि परिहसि
हृदय हार भेल भारे ।
गिरि सम गरुअ मान नहि मुंचसि
अपरुव तुअ वेबहारे ।। "

कृष्ण अपन दोष स्वीकार करैत ओकर दण्डक सेहो निर्देश करैत छथि -

" मानिनि मानह जओं मोर दोसे ।
साँति करह बरु न करह रोसे ।।
भोह कमान विलोकन वाने ।
बेधह बिधिमुखि कय समधाने ।। "

अंतमे नारी हृदयक संकीर्णताक परिचय दैत सत्यभामा कहैत छथि -

" माधव करह हमर समधाने ।
देह मोहि पारिजात तरु आने ।।
एहिखन तोरित करिअ परयाने ।
नहि तइं हमर अबस अबसाने ।।
एहि पर हमर पुरत अभिमाने ।
हयत हँसी नहि हो अपमाने ।। नाटकक एहि पद सभसँ स्पष्ट होइत अछि जे एहि मध्य वियोग श्रृंगारक मनोवैज्ञानिक अनुभूति उपस्थित कएल गेल अछि । ओना ई कहल जा सकैत अछि जे वीर रसक

समावेश श्रृंगारहिक सहायतार्थ भेल अछि। हं एहिमे कोनो संदेह नहि जँ एकरा श्रृंगार रस प्रधान कहल जाए। किन्तु वीर रसक समावेश अल्प रहितहुँ सूत्रधारक मुख सँ नाटकक उद्देश्यक चर्चा तथा नाटकक नामकरण एहि दुनू तत्व कें कोनहुँ दशा मे गौण नहि कहल जा सकैत अछि। एहि मध्य हास्यक समावेश भेला सँ नाटकक रोचकता बढ़ि गेल अछि। हास्यक चर्मोत्कर्ष त तखन होइत अछि जखन हुनका लोकनिक मूल्य एक गाय धरि निर्धारित होइत अछि तथा सत्यभामा एवं सुभद्रा कृष्ण एवं अर्जुन कें कीनैत छथि।

ओज, प्रसाद एवं माधुर्य गुणक समावेश सँ नाटकक ग्राह्यता अतिविशिष्ट भए गेल अछि। पात्रोचित भाषाक प्रयोग भेल अछि। सुललित भाषाक कारणें ई अत्यधिक लोकप्रिय भए गेल। पात्र सभक वार्तालाप संस्कृत तथा प्राकृत मे भेल अछि। हिनक रचना नाटकोचित तथा काव्योचित गुण सँ समन्वित अछि। शिल्प कौशलक दृष्टिएँ ई एक साधारण कोटिक नाटक थिक।

पारिजातहरणक गीतक कारणें उमापति महाकविक रूपमे प्रतिष्ठापित होइत छथि। एहि नाटक मध्य 21गोट मैथिली गीत अछि। एकर अतिरिक्त हिनक किछु स्वतंत्र पद सेहो उपलब्ध अछि। श्रृंगारिक पदक अतिरिक्त विष्णु पद ओ सोहर प्रसिद्धि पौलक अछि। हिनक भाव ओ भाषा पांडित्यपूर्ण अछि। विद्यापतिक परम्परामे रहितहुँ हिनक काव्य ओहिमे किछु नवीनता अनलक। प्रो० रमानाथ झा मैथिली काव्य भाषाक विकासक दृष्टिएँ कहैत छथि जे लोक भाषा त्यागि पंडितक भाषा हिनकहि काव्य सँ विशेष प्रयुक्त होमए लागल। एही कारणें काव्य रचना लोक साहित्यक रूपकें त्यागि वर्गीय होमए लागल जकर चर्मोत्कर्ष कविवर हर्षनाथ झाक काव्य मे पबैत छी। फलतः हिनक काव्यक प्रचार - प्रसार पण्डिते मंडली धरि सीमित रहि गेल।

उमापतिक कवितामे कल्पनाक प्रौढ़ता, काव्य प्रसिद्धिक प्रयोग, अलंकारक चातुरी तथा वर्णनक चमत्कार सर्वत्र दृष्टिगोचर होइत अछि। प्रत्येक गीतमे रसमयता, संगीतमयता, गेयधर्मिता तथा प्रासंगिकता सर्वथा उत्कृष्ट रूपमे विद्यमान अछि। नाटकक गीतमे रसोपयुक्त राग सभक सन्निवेश भेल अछि। पारिजात हरणक पद हो, सोहर हो, विष्णु पद हो वा अन्य कोनो पद हो, काव्य कलाक दृष्टिसँ हिनक प्रत्येक रचना महत्वपूर्ण अछि। कवि पंडित मुख्य उमापति जेहने सिद्धहस्त नाटककार छथि तेहने कुशल कवि सेहो।

पारिजातहरण नाटकक संबंध मे डॉ० वासुदेव नारायण अग्रवालक मत छनि " जे प्रत्येक व्यक्तिक आध्यात्मिक सत्ता कृष्ण रूप थिक आ ओ दू प्रवृत्ति स्वरूप रुक्मिणी ओ सत्यभामा छथि। ओ अपन आलोकक संग कृष्ण मे तल्लीन छथि। एही तरहें हुनक आन स्त्री यथा सत्यभामा कें आन प्रवृत्तिक द्योतक मानैत छथि। इन्द्र कें विज्ञानात्मक बुद्धि मानि ई कहैत छथि जे पारिजात पुष्पक हेतु बहुत संघर्ष करए पड़ैत छैक। एही तरहें विद्यापतिक कविताक सेहो बहुत विद्वान अतिरंजित टीका करैत छथि। महाभारतक विषय मे सेहो इएह बहुत लोकक कहब छनि जे ओहो सत - असत प्रवृत्तिक संघर्षक प्रतीक थिक। यदि कोनो पाठकक कृष्णानुराग तीव्र भक्ति सँ ओत - प्रोत होअए आ ओकर चित्त ओहीं प्रकारें प्रभावित भए जाइ त ओ एही तरहक स्थिति स्वीकार करत। परन्तु पारिजातहरण नाटक कें देखला सँ वा ओकर पद सभक पठन, चिंतन, मननसँ जे साधारण भाव प्रकट होइत छैक ताहि सँ ई भान नहि होइछ जे ई कोनो प्रतीके कें ध्यानमे राखि कए लिखल गेल हो। हं कृष्ण कें त विष्णुक अवतारे मानल गेल अछि आ ई हुनक लीलाक वा कृष्णावतारक एक दृश्य मात्र थिक। पारिजातहरणक मैथिली पद सभ काव्य शास्त्रमे निरूपित श्रृंगार रस सँ सराबोर अछि आ एकरामे उत्तम कविताक सभ लक्षण छैक। लक्षण चिन्हबाक काज नहि होइछ। कविताक आत्मामे जे भाव, कल्पना, रस, चित्त, रूपक, माधुर्य तथा कान्ति रहैत छैक, सभक एक समेकित भाव सँ पाठक प्रबल रूपें प्रभावित होइछ आ एहि प्रकारक रचनाक रचनाकार कें लोक महान कवि मानैत अछि। कहि चुकल छी जे पारिजातहरणक नाटकीय गुण गौण भए जाइछ आ काव्य पक्ष प्रखर एवं प्रबल रूपें चित्त कें आकर्षित करैत अछि।"